CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

A255

परा वाक्

परा
पश्यन्ती
मध्यमा
वैखरी

परा
पश्यन्ती
मध्यमा
वैखरी

परा वाक्

परा वाक्

परा वाक्

परा वाक्

रचयिता
श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-गोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर
स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पश्य वाक्

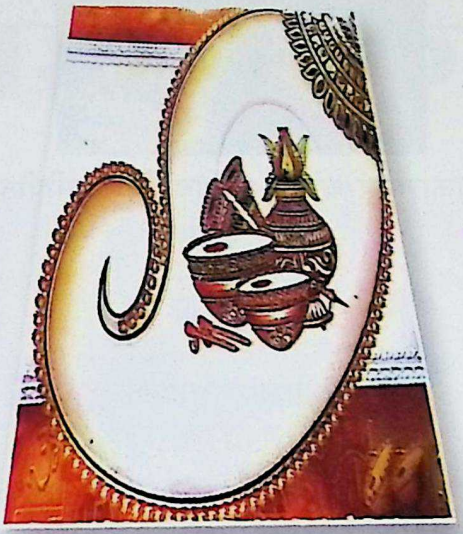

परा
पश्यन्ती
मध्यमा
वैखरी

परा
पश्यन्ती
मध्यमा
वैखरी

परा वाक्

परा वाक्

परा वाक्

परा वाक्

रचयिता

श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-गोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर

स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"स्वस्तिप्रकाशनसंस्थान"-श्रीगोवर्द्धनमठपुरीपीठ-पुरीका
१६७.वाँ पुष्प

परा वाक्

सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण वि. स. २०७५; ई.सन् २०१८.
१०००प्रति

सहयोगराशि
२०. ०० (बीस रुपये)

स्वस्तिप्रकाशनसंस्थान
श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य - गोवर्द्धनमठ - पुरीपीठ
पुरी (ओडिशा)
भारत

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परा वाक्

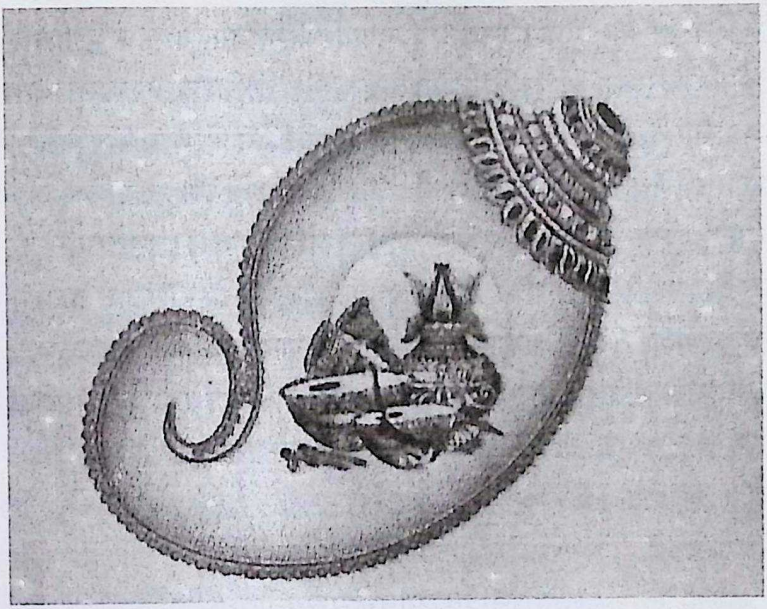

रचयिता
श्रीमज्जगद्गुरु-शङ्कराचार्य-गोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर
स्वामी निश्चलानन्दसरस्वती

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रीहरिः ❁ श्रीगणेशाय नमः

परा वाक्

प्रिय पाठकवृन्द! सस्नेह स्मरण।

विदित हो कि **'परा वाक्'** पूज्यपाद श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठाधीश्वर स्वामी श्रीनिश्चलानन्दसरस्वती महाभागके द्वारा विरचित तथा **'स्वस्तिप्रकाशन संस्थान - पुरीपीठ'** से प्रकाशित १६७ वाँ ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ दार्शनिक, वैज्ञानिक और व्यावहारिक - तीनों दृष्टियोंसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसके आद्यन्त अनुशीलनसे परा, पश्यन्ती, मध्यमा और वैखरी - संज्ञक वाक् - चतुष्टयका यथार्थ बोध सुनिश्चित है; तद्वत् वाक् के पर्यवसानभूत स्वप्रकाश संवित् की प्रत्यगात्मस्वरूप ब्रह्मरूपताका तथा प्रकृतिसहित उसके कार्यभूत जगत् की वाङ्मयताका सुस्थिर बोध भी सुनिश्चित है।

भवदीय

निर्विकल्पानन्दसरस्वती

निज सचिव

श्रीमज्जगद्गुरु - शङ्कराचार्य श्रीगोवर्द्धनमठ - पुरीपीठाधीश्वर

आषाढ - कृष्ण २, वाराणसी; वि.स. २०७५

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परा - वाक्

'मनश्चन्द्रो रविर्वायुर्दृष्टिरग्निरुदाहृतः। बिन्दुनादकलाब्रह्मन् विष्णुब्रह्मेशदेवताः।।' (योगशिखोपनिषत् ६.७०), 'वागध्यात्मं वक्तव्यमधिभूतमग्निस्तत्राधिदैवतम्' (सुबालोपनिषत् ५) के अनुशीलनसे मनकी चन्द्ररूपता, वायु (प्राण) की सूर्यरूपता और नेत्र तथा वाक् की अग्निरूपता सिद्धहै। **'सोमसूर्याग्निवायवः' (योगशिखोपनिषत् ३.११)** आदि स्थलोंमें सोम, सूर्य , अग्नि और वायु - संज्ञक चार देवोंका उल्लेख है। चन्द्रसे उद्भासित मन **बिन्दु** है। सूर्यसे उद्दीप्त वायु **नाद** है। अग्निसे उद्भासित दृष्टि तथा वाक् **कला** है। दूरस्थ अग्नि सूर्य है और सन्निकट सूर्य अग्नि है। अत एव सूर्य और अग्निमें एकत्व है। **'अग्नीषोमात्मकं विश्वम्' (बृहज्जाबालोपनिषत् २.१, २.४), 'अग्नीषोमात्मकं जगत्' (रामपूर्वतापिन्युपनिषत् ६)** के अनुसार जगत् की अग्नि और सोमात्मकता सिद्ध है। आध्यात्मिक धरातलपर जगत् वाङ्मय और मनोमय है। आधिभौतिक धरातलपर जगत् नामरूपात्मक है। प्राणात्मक नाद और मनोरूप बिन्दुका सम्मिलितरूप चित्त है -

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दो गुणोंसे सम्पन्न वायु सन्निकट निर्विशेष है। शब्द तथा स्पर्श - नामक दो गुणोंसे सम्पन्न वायुकी अपेक्षा केवल शब्दगुणसम्पन्न आकाश सन्निकट निर्विशेष है। अत एव शब्दब्रह्मात्मक वेदके अभिव्यञ्जक संस्थान वायु, तेज, जल तथा पृथिवी-संज्ञक चार भूत हैं।

आकाशनिष्ठ शब्द, वायुनिष्ठ शब्द - स्पर्श, तेजोनिष्ठ शब्द-स्पर्श - रूप, जलनिष्ठ शब्द - स्पर्श - रूप -रस तथा भूमिनिष्ठ शब्द - स्पर्श - रूप -रस - गन्धका योग १+२ +३ +४ +५= १५ है। इनकी **'क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं'** पञ्चदशाक्षरी श्रीविद्या अर्थात् वेदविद्या संज्ञा है।

भूदेवीसे विनिर्मित शरीर षड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पञ्चम, धैवत, निषाद, इष्ट, अनिष्ट, प्रणिधान - संज्ञक **दशविध शब्दा**भिव्यञ्जकसंस्थान है। यह उष्ण, शीत, सुख, दुःख, स्निग्ध, विशद, खर, मृदु, रूक्ष, लघु, गुरु, गुरुतर - **द्वादशविध स्पर्शका** अभिव्यञ्जकसंस्थान है। यह स्थूल -ह्रस्व, दीर्घ, चतुरस्र, अनुवृत्तवान् (चतुर्दिक् गोल), शुक्ल, कृष्ण, रक्त, पीत, नील, अरुण, कठिन, चिक्कण, श्लक्ष्ण (भास्वर), पिच्छल (स्नेहन), मृदु, दारुण - संज्ञक **षोडशविध रूपका** अभिव्यञ्जकसंस्थान है। यह मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु, कषाय - नामक **षड्विध रसका** अनुभवसंस्थानरूप आश्रय होनेसे **षडाश्रय** है। इष्ट, अनिष्ट, मधुर, कटु, निर्हारी (दूरगामी तेज), मिश्रित, स्निग्ध, रूक्ष, विशद -नामक **नवविध गन्धका** अनुभवसंस्थानरूप भोगायतन है।

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुदुर्लभता स्वतः सिद्ध है। अपने अधिकारकी सीमामें गुरुमुखसे इसका श्रवण अपेक्षित है। आत्मदर्शनकी भावनासे श्रवणके अनन्तर मनन तथा प्राणनरूप निदिध्यासन अपेक्षित है।

परमात्मतत्त्वका अभिव्यञ्जक, सूचक, बोधक होनेके कारण; तद्वत् सर्वमन्त्रमूल और मूलाधारसमुद्भूत होनेके कारण एवम् परमात्मरूपताके कारण इसे मूलमन्त्र कहा जाता है -

मननात्प्राणनाच्चैव मद्रूपस्यावबोधनात् ।।
मन्त्रमित्युच्यते ब्रह्मन् मदधिष्ठानतोऽपि वा ।
मूलत्वात्सर्वमन्त्राणां मूलाधारसमुद्भवात् ।।
मूलस्वरूपलिङ्गत्वान्मूलमन्त्र इति स्मृतः ।
(योगशिखोपनिषत् २.७-८.१/२)

सूक्ष्म तथा कारण होनेके कारण लयशील तथा गमनशील और परमात्माका लक्षक होनेके कारण मूलसंज्ञक आत्ममन्त्रको लिङ्ग कहा जाता है -

सूक्ष्मत्वात्कारणत्वाच्च लयनाद्गमनादपि ।।
लक्षणात्परमेशस्य लिङ्गमित्यभिधीयते ।
(योगशिखोपनिषत् २.९-९.१/२)

मूलमन्त्र विश्व और वैश्वानररूप वैराजसंज्ञक पञ्चदेवमय स्थूल ब्रह्मका, तैजस तथा हिरण्यगर्भरूप सूक्ष्मरूपका और प्राज्ञ

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा ईश्वररूप कारणरूपका जहाँ ज्ञापक है; वहाँ कार्यकारणातीत अप्रमेय अनिर्देश्य अवाङ्मनसगोचर अनन्त अपरिच्छेद्य अनुपम अनामय परब्रह्मका लक्षक है।

सर्ववाच्यका वाचक **मन्त्र** होता है। क्रिया, कर्म, कर्त्ता तथा इज्यका ख्यापक **तन्त्र** होता है। बिन्दु, रेखा, कोण, वृत्त, योनि, दल, पद्म तथा अक्षरान्वित चक्रसंज्ञक **यन्त्र** होता है। बिना मन्त्र, तन्त्र तथा यन्त्रके देवताका प्रसाद असम्भव है। देवताका कारण शरीर मन्त्र, सूक्ष्म शरीर तन्त्र तथा स्थूल शरीर यन्त्र होता है। मन्त्र अन्वर्थ होता है। वटबीजस्थ महाद्रुमके सदृश बीजमन्त्रस्थ चराचर जगत् मान्य है। मन्त्रके मननसे त्राण सुनिश्चित है -

ब्रह्मादीनां वाचकोऽयं मन्त्रोऽन्वर्थादिसंज्ञकः ।
जप्तव्यो मन्त्रिणा नैवं विना देवः प्रसीदति ।।
क्रियाकर्मेज्यकर्तृणामर्थं मन्त्रो वदत्यथ ।
मननात्त्राणनान्मन्त्रः सर्ववाच्यस्य वाचकः ।।
सोऽभयस्यास्य देवस्य विग्रहो यन्त्रकल्पना ।
विना यन्त्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति ।।
(रामपूर्वतपिन्युपनिषत् १.११-१३)

यथैव वटबीजस्थः प्राकृतश्च महान्द्रुमः ।।
तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम् ।
(रामपूर्वतपिन्युपनिषत् २.२-३)

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

****

परा वाक्

देहगत मूलाधारादि स्थानभेदसे परादि वाग्भेदका परिज्ञान आवश्यक है। अभिव्यञ्जकके भेदसे अभिव्यक्तिमें भेद सनातन सिद्धान्त है-

ऐं चत्वारि वाक् परमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः।
गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति ।।
(सरस्वतीरहस्योपनिषत् ६)

मूलाधारात्प्रथममुदितो यस्तु भावः पराख्यः
पश्चात्पश्यन्त्यथ हृदयगो बुद्धियुङ्मध्यमाख्यः ।
वक्त्रे वैखर्यथ रुरुदिषोरस्य जन्तोः सुषुम्नां
बद्धस्तस्माद्भवति पवनः प्रेरितो वर्णसंज्ञः ।।
(सूतसंहिता - तात्पर्यदीपिका १. शिव.५.९ में समुद्धृत)

'अष्टौ स्थानानि वर्णानामुरः कण्ठः शिरस्तथा। जिह्वामूलं च दन्ताश्च नासिकोष्ठौ च तालु च।।' (पा.शि. १३) के अनुसार वर्णोच्चारणके उर, कण्ठ, शिर, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु - संज्ञक आठ संस्थान हैं। कण्ठ, शिर, जिह्वामूल, दन्त, नासिका, ओष्ठ और तालु - संज्ञक सात संस्थानगत **वैखरी वाक्** है। मनोभावापन्न हृद्गत **मध्यमा वाक्** है। बुद्धिभावापन्न नाभिगत **पश्यन्ती वाक्** है। अव्यक्तभावापन्न मूलाधारगत **परा वाक्** है।

परायामङ्कुरीभूय पश्यन्तां द्विदलीकृता ।।

*** Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal. ***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

****

परा वाक्

अक्षरसंज्ञक परमात्मामें शब्दके विलीन होनेपर निःशब्द परमात्मा ही शेष रहता है -"संशब्दश्चाक्षरे क्षीणे निःशब्दं परमं पदम्।" (नादबिन्दूपनिषत् ४९), "शब्दाक्षरं परं ब्रह्म यस्मिन्क्षीणे यदक्षरम्। तद्विद्धानक्षरं ध्यायेद्यदीच्छेच्छान्तिमात्मनः।।" (ब्रह्मबिन्दूपनिषत् १६)

यन्नमस्यं चिदाख्यातं यत्सिद्धीनां च कारणम् ।
येन विज्ञातमात्रेण जन्मबन्धात्प्रमुच्यते ।।
(योगशिखोपनिषत् ३. १)

"जो चिदात्मतत्त्व नमस्कारके योग्य है और सिद्धियोंका कारण है, जिसके विदित होनेमात्रसे ज़न्मबन्धसे विनिर्मुक्त होता है।"

यत्र बिन्दुश्च नादश्च सोमसूर्याग्निवायवः ।।
इन्द्रियाणि च सर्वाणि लयं गच्छन्ति सुव्रत ।
वायवो यत्र लीयन्ते मनो यत्र विलीयते ।।...
एतत्क्षराक्षरातीतमनक्षरमितीर्यते ।।
क्षरः सर्वाणि भूतानि सूत्रात्माऽक्षर उच्यते ।।
(योगशिखोपनिषत् ३. ११-१५.१/२)

"हे सुव्रत! जहाँ बिन्दु, नाद, सोम - सूर्य - अग्नि - वायु और सब इन्द्रियाँ लीन होती हैं; आध्यात्मिक प्राणपवन जहाँ लीन होते हैं और मन जहाँ विलीन होता है, वह यह क्षर और अक्षरसे अतीत अनक्षर कहा जाता है । सकल कार्यप्रपञ्च क्षर है और सूत्रात्मा अक्षर कहा जाता है।।"

****

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

****

परा वाक्

अकारादिक्षकारान्तान्यक्षराणि समीरयेत् ।
अक्षरेभ्यः पदानि स्युः पदेभ्यो वाक्यसम्भवः ।।
सर्वे वाक्यात्मका मन्त्रा वेदशास्त्राणि कृत्स्नशः ।
पुराणानि च काव्यानि भाषाश्च विविधा अपि ।।
सप्तस्वराश्च गाथाश्च सर्वे नादसमुद्भवाः ।
एषा सरस्वती देवी सर्वभूतगुहाश्रया ।।
वायुना वह्नियुक्तेन प्रेर्यमाणा शनैः शनैः ।
तद्विवर्तपदैर्वाक्यैरित्येवं वर्तते सदा ।।
(योगशिखोपनिषत् ३. २-९)

"मूलाधारमें सन्निहित स्वाश्रयभूता बिन्दुरूपिणी शक्ति **परा वाक्** है। सूक्ष्मबीजसे अङ्कुरके सदृश उससे परमाक्षररूप नाद उत्पन्न होता है, जो कि परमात्मवाचक वेदबीज स्फोटसंज्ञक शब्दब्रह्म ओङ्कार कहा जाता है। वेदार्थवेत्ता महर्षिगण उसे **पश्यन्ती** कहते हैं, कारण यह है कि योगी उससे स्थूल - सूक्ष्म - कारणात्मक विश्वको जानते हैं। मेघगर्जनके सदृश हृदयमें अभिव्यक्त और सन्निहित होनेपर वह **मध्यमा** वाक् कही जाती है। **'स्वशब्देन भवेत्प्राणः'** (**ध्यानबिन्दूपनिषत् ४७**) के अनुसार स्वसंज्ञक प्राणके योगसे ताल्वादि संस्थानसङ्घातसुलभ शाखापल्लवसदृश स्वरसंज्ञक **वैखरी वाक्** की समुत्पत्ति होती है। अकारसे क्षकारपर्यन्त अक्षर हैं। अक्षरोंसे पद, पदोंसे वाक्यकी संरचना होती है। वेदशास्त्र, पुराण, विविध भाषा,

****

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और अभ्यन्तर शब्दका अनुगम सिद्ध है। कारण यह है कि पूर्वोक्त विधासे शब्दानुगमके बिना व्यवहारसाधक किसी भी प्रत्ययका उद्गम सर्वथा असम्भव ही है। शब्दगुणवाले आकाशकी वायु आदिमें अनुगतिके कारण भी स्पर्शज्ञानादिमें शब्दका अनुगम सिद्ध है।

ध्यान रहे- शब्दज्ञानमें; तद्वत् सङ्कल्प, निश्चय, स्मृति तथा गर्वात्मक बोधमें जहाँ शब्द ज्ञानाभिव्यञ्जक है, वहाँ इनमें ज्ञानानुगति भी सिद्ध है। अतः शब्द जहाँ ज्ञानाभिव्यक्तिमें निमित्त है; वहाँ अभिव्यङ्ग्य ज्ञान शब्दका उपादान है।

"न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते। अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते।।" (वाक्यपदीयम् १.१२३) के अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है कि व्यवहारसाधक बोधमें शब्दानुगम स्वभाव सिद्ध है। शब्दमें गन्धादिकी अपेक्षा सन्निकटतासे ज्ञानाभिव्यञ्जकता चरितार्थ है।

'पूर्वमेकमेवाद्वितीयं ब्रह्मासीत्। तस्मादव्यक्तमेकाक्षरम्। तस्मादक्षरान्महत्। महतोऽहङ्कारः। तस्मादहङ्कारात्पञ्च तन्मात्राणि। तेभ्यो भूतानि। तैरावृतमक्षरम्।' (गोपालोत्तरतापिन्युपनिषत् ९) के अनुशीलनसे यह तथ्य सिद्ध है।

'....यज्ञः कर्मसमुद्भवः। कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्। तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्' (श्रीमद्भगवद्गीता ३. १४. १५) इस भगवद्वचनके अनुशीलनसे यह

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पञ्चप्रभेद पञ्च ज्ञानेन्द्रियोंसे युक्त ज्ञानशक्तिबलसम्पन्न हैं - **'प्राणोऽपानः समानश्चोदानव्यानौ च वायवः।। पञ्चकर्मेन्द्रियैर्युक्ताः क्रिया-शक्तिबलोद्यताः। नागः कूर्मश्च कृकरो देवदत्तो धनञ्जयः।। पञ्च-ज्ञानेन्द्रियैर्युक्ता ज्ञानशक्तिबलोद्यताः'** (ब्रह्मविद्योपनिषत् ६६-६८) । ध्यानबिन्दूपनिषत् में पञ्च ज्ञानेन्द्रियके साथ पञ्च कर्मेन्द्रियके संयोगका उल्लेख है।

यथा -

१. अन्तःकरणप्रभेद	२.विषय- प्रभेद	३.अधिदैव- प्रभेद
अन्तःकरण	ज्ञान (ज्ञातृत्व, ज्ञातव्य)	क्षेत्रज्ञ
मन	सङ्कल्प (मन्तव्य))	चन्द्रमा
बुद्धि	निश्चय (बोद्धव्य)	ब्रह्मा
चित्त	अनुसन्धान (चेतयितव्य)	वासुदेव
अहङ्कार	अभिमान (अहंकर्त्तव्य)	रुद्र

४. ज्ञानेन्द्रिय	५.विषय	६.वायु	७.क्रिया	८. देव
श्रोत्र	शब्द	अपान	श्रवण	दिक्
त्वक्	स्पर्श	समान	समीकरण	वात
चक्षु	रूप	प्राण	उच्छ्वास	अर्क
जिह्वा	रस	उदान	ग्रहण	वरुण
घ्राण	गन्ध	व्यान	उन्नयन	अश्विनी

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

***

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Prof. Madhav Prasad Lamichhane Collection, Kathmandu, Nepal